Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, GIF: 2.7282, CIF: 5.647, Volume 09, No. 04, October, 2019, pp. 311-316

राजनीति में महिलाओं की बदलती भूमिका का एक समाज शास्त्रीय विश्लेषण

योगिता रानी पंवार*

सार

राजनति ने जनता का हमेशा शोषण किया है, कभी धर्म को सुरक्षित रखने के नाम पर तो कभी जनता के अधिकारों, जानमाल की सुरक्षा के नाम पर। इसने हमेशा साम्प्रदायिकता, खून खराबे को बढ़ाया है। राजनीति पुरूषों का अखाड़ा रहा है, यहां पुरूषों का वर्चस्व अधिक पाया जाता है। राजनीति में पुरूष– महिलाओं की सहभागिता के मामले में दुनिया भर के स्त्री–पुरूषों में अभी तक काफी अंतर है। हालांकि लगभग सभी देशों के संविधान में स्त्री–पुरूषों को समान अवसर बराबर पर बल दिया है, किन्तु व्यावहारिक रूप में ऐसा नहीं पाया जाता आधुनिक युग में राजतंत्र का पतन लोकतंत्र के विकास भारतीय समाज में पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, संस्कृतिकरण, प्रौद्योगिकीकरण, तकनीक, वैश्वीकरण के विकास के कारण जनमत को विशेष महत्व मिलने लगा तब समाज के कुछ बलशाली व्यक्तियों के स्थान पर आम जनता का भी वर्चस्व बढने लगा। आम जनता की भागीदारी धीरे धीरे महिलाओं की भागीदारीता बढ़ले लगी। महिलाओं के इस बढ़ती भागीदारी से राजनीति का स्वरूप भी बदलता जा रहा है, जो न केवल भारत के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक अपूर्व अनुभव है। महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान करके चुनाव प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी को भी बढ़ाते हैं। आधुनिक परिवर्तनों को इस लेख में वर्णित किया है, नये परिवर्तनों ने राजनीति में महिला की भूमिकाओं को बदला है इन सभी की चर्चा करना इस लेख का प्रमुख विषय है। प्रस्तुत लेखन सामग्री द्वितीय स्त्रोत से ली है।

कुंजी शब्दः *सहभागिता, लोकतंत्र, प्रौद्योगिकी, साम्प्रादायिकता, समानता का अधिकार, संस्कृतिकरण, वैश्वीकरण।*

प्रस्तावना

भारतीय समाज में महिला राजनीति

भारतीय संविधान कानून ने देश के सभी नागरिकों को जाति, धर्म, भाषा, लिंग के आधार पर समानता का अधिकार दिया है, किन्तु व्यवहार में देखें तो जाति, धर्म, भाषा, लिंग के आधार पर महिलाओं में होने वाले अत्याचार लैंगिक आधार पर भेदभाव, असमानता, घरेलू हिंसा शोषण समाज में दिखाई देती है। महिलाओं की परिस्थितियों में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक स्तर पर परिवर्तन आ रहे हैं, किन्तु यह परिवर्तन नाममात्र का है। भारतीय समाज में नारी की स्थिति अनेक प्रकार के विरोधों से ग्रस्त रही है।

* सहायक आचार्या, समाजशास्त्र विभाग, सत्य साई पी.जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

एक तरफ वह परम्परा में शक्ति, देवी के रूप में देखी गई है, वहीं दूसरी ओर शताब्दियों से वह 'अबला', 'माया' के रूप में देखी गई है। दोनों ही अतिवादी धारणााओं ने नारी के प्रति समाज में एक और रूढ़िगत सोच, आधुनिकता के उन्मेष के कारण नारी का शोषण होता रहा है तो दूसरी ओर आधुनिकता की अवधारणा के साथ–साथ उसे पुरूषों के बराबर सामर्थ्यवान समझने का अभिमान भी चला है। वर्तमान में पुरूषों की तुलना में महिलाओं की छवि उसके सामर्थ्य में आधारभूत परिर्वन आया है, किन्तु आज भी नारी इतनी अशक्त है कि उसको सबल बनाने के लिए भारत में 2001 में महिला सशक्तीकरण वर्ष घोषित किया गया है।

लिखते हैं कि किसी भी देश की महिलाओं की वास्तविक स्थितिक का अनुमान उस देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक स्थिति को देखकर लगाया जा सकता है, व्यक्ति उत्तरदायी हैं कि उसने नारी के लिए बहुत से विचारों को गढ़ा जो उसके सौंदर्य, अस्मिता को बताते हैं, वहीं वह पुरूषों से भिन्न है – **राधाकृष्णन (2008)।**" प्रजातंत्री में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी के साथ राजनैतिक प्राणी भी हैं इसलिए वह राज्य सरकार द्वारा सम्पादित गतिविधियों में रूचि लेता है। प्रजातांत्रिक व्यवस्था किसी भी समाज में सदस्यों को राजनीति में उनकी भागीदारी को प्रेरणा देती है। राजनीति से हमारा तात्पर्य राज्य और सरकारों की गतिविधियों, व्यक्तियों के राजनीतिक व्यवहार से है। व्यापक रूप से देखें तो समाज में, समाज के कार्यकलापों में जहां भी शक्ति का संघर्ष होता है, राजनीति संस्थाएं आदि से सम्बन्धित ज्ञान को हम राजनीति के परिप्रेक्ष्य में देख सकते हैं। समाजशास्त्र अपनी उत्पत्ति के प्रारम्भिक काल से ही राजनीतिक प्रतिक्रियाओं, संस्थाओं, महिलाओं का अध्ययन करता रहा है। आधुनिक काल में अनेक राजनीतिशास्त्रियों ने राजनीतिक प्रक्रियाओं, महिलाओं की राजनीति में भागीदारिता की भूमिका की वास्तविकताओं को समझने के लिए उन समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का प्रयोग किया है, जो राजनैतिक व्यवहारों, घटनाओं पर प्रभाव डालते हैं। महिलाएं भारतीय समजा की महत्वपूर्ण अंग है, हिस्सा है। महिलाओं ने साज के किसी भी पक्ष को प्रभावित किये बिना नहीं छोड़ा, राजनीति भी इससे वंचित नहीं है – **ड्यूमा (1970)।**" विद्वानों द्वारा यह स्वीकार किया गया है कि भारतीय मानव श्रेणीबद्धता अन्य सामाजिक प्रणालियों से भिन्न है। भारत में राजनीति में महिलाओं की भागीदारिता को लेकर आधुनिक काल अति महत्वपूर्ण है। हमारे स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई, मैडम बीकाजी कामा, विजयलक्ष्मी पंडित, सुचेता कृपलानी, सरोजनी नायडू, कस्तुरबा और स्वतंत्रता के बाद की राजनीति में गिरिजा व्यास, सुषमा स्वराज, ममता बनर्जी, रेणुका चैधरी, सोनिया गांधी इत्यादि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, श्रीमति इंदिया गांधी जी ने तो 15–16 वर्षों तक भारत के प्रधानमंत्री का नेतृत्व सम्भाला। आजादी के बाद बनाये गये संविधान ने महिलाओं को पुरूषों के समान वोट डालने का अधिकार दिया, पंचायत से लेकर संसद तक जनता का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुनाव लड़ने का भी अधिकार दिया है। पंचायत राज व्यवस्था में सभी जन प्रतिनिधि मंचों पर कम से कम 1/3 सदस्यता के साथ राजनीति में महिला भागीदारी का संख्यात्मक प्रतिनिधित्व बढ़ा है। 1/3 एक तिहाई सदस्यता महिलाओं के लिए आरक्षित कर देने से समाज में पुरूष, महिला की बराबरी की सोच तेजी से बढ़ी है। महिलाओं में आत्म विश्वास बढ़ा है, उनकी अपने आप के प्रति छवि सुधरी है, वे अपनी ही निगाहों में ऊँची उठी है। समाज में महिला सम्बन्धी मुद्दों पर विशेष बल दिया जाने लगा है। महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार, बल प्रयोग हिंसा के विरूद्ध जागरूकता बढ़ी है, बालिका शिक्षा को बल मिला महिला मतदाताओं की इज्जत बढ़ी। 1994 में संविधान में 73, 74वां संशोधन कर स्थानीय, शहरी स्तर पर चुनाव प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारिता बढ़ाई है। कांग्रेस व भाजपा महिलाओं को संसद विधानसभा में 33 फीसदी भागीदारी की बात करती हैं लेकिन दोनों ही पार्टियों में वास्तविक धरातल पर कभी महिलाओं को इतनी हिस्सेदारी नहीं दी। अब तक हुए लोकसभा चुनाव में प्रदेश में कांग्रेस ने अधिकतम 24 फीसदी और भाजपा ने 16 फीसदी भागीदारी दी है। जयपुर के पूर्व राज घराने से जुड़ी गायत्री देवी राजस्थान से चुनी जाने वाली पहली महिला सांसद ही नहीं है बल्कि वे जयपुर से तीन बार सांसद निर्वाचित हो चुकी है। गायत्री देवी 1962, 1967 और 1971 में हुए लोकसभा चुनाव में जयपुर से स्वतंत्र पार्टी की सांसद चुनी गई। इसके बाद से जयपुर से कोई भी महिला सांसद नहीं चुनी गई।

कांग्रेस–भाजपा में महिलाओं की भागीदारी

लोकसभा	महिला	कांग्रेस	जीत	भाजपा	जीत
2014	1	6	0	1	1
2009	3	5	3	3	0
2004	2	1	0	4	2
1999	3	4	1	2	2
1998	3	3	2	2	1
1996	4	2	2	2	2
1991	4	1	1	3	3
1989	1	3	0	1	1
1984	2	2	0	2	0
1977	0	0	0	0	0
1971	2	0	0	—	—
1967	1	0	0	—	—
1962	1	0	0	—	—
1957	0	0	0	—	—
1952	0	0	0	—	—

विश्व स्तर पर महिलाओं की राजनीति में भूमिका

महिलाओं को राजनीति में प्रतिनिधित्व देने के मामलों में विश्व में स्केडिनेवायाई देश सबसे आगे हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, रूप की स्थिति अच्छी नहीं है। चीन नम्बर वन है। नार्वे (39.4 प्रतिशत), फिनलैंड (33.5 प्रतिशत), डेनमार्क (33 प्रतिशत), हालैंड (नीदरलैंड) (31.3 प्रतिशत), न्यूजीलैंड (29.2 प्रतिशत), आस्ट्रिया (26.8 प्रतिशत), जर्मनी (26.2 प्रतिशत), अर्जेंटिना (25.3 प्रतिशत), दक्षिण अफ्रीका (25 प्रतिशत) से ज्यादा महिलाएं संसद सहज है। दूसरी तरफ कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, इराक जैसे भी देश हैं जहां की संसद में महिला प्रतिनिधि जीरो है। दिल्ली में हुये महिला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी यह आवाज उठाई गई थी कि तमाम दुनिया में राजनति में महिलाओं की सहभागिता बहुत कम है। इसलिए "अंतर संसदयी संघ" के नई दिल्ली में हुए अधिवेशन का लक्ष्य सांसदों में महिलाओं की बराबरी की भागीदीर प्राप्त करने का वातावरण बनाया था जिनमें 30 प्रतिशत महिलाओं को आरक्षण देने की सिफारिश की थी। वर्तमान में संसद, विधान सभाओं में महिला भागीदारी बढ़ाने के लिए महिला प्रतिनिधियों के 33 प्रतिशत आरक्षण के विकल्प को चुना जो भारतीय राजनीति में क्रांतिकारी मोड़ है।

राजस्थान की विधानसभा में महिलाओं की भागीदारी

07 दिसम्बर, 2018 को पांच राज्यों की विधानसभा के चुनाव एसोसिएशन डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (ADR) और हुए चुनाव आयोग के अनुसार पांच राज्यों से आए विधा सभा चुनाव में इस बार महिला विधायकों की संख्या में दो प्रतिशत की गिरावट आई है। इन राज्यों में कुल 679 विधानसभा सीटें हैं। केवल छत्तीसगढ़ एकमात्र ऐसा राज्य है, जहाँ इस बार इनकी संख्या बड़ी है। मिजोरम विधानसभा में महिला प्रतिनिधि इस बार भी शून्य रहा। मिजोरम विधानसभा में महिला प्रतिनिधित्व इस बार भी शून्य रही है। दिसम्बर 2018 में सम्पन्न विधानसभा चुनाव में राजस्थान के विगत तीन चुनावों में महिलाओं की भागीदारी निम्न रहीः–

प्रदेश	चुनाव का कार्य			
	2008	2013	2018	कुल
राजस्थान	28	25	23	76
कुल	28	25	23	76

राजस्थान के पिछले तीन विधानसभा चुनावों (2008, 2013, 2018) का तुलनात्मक अध्ययन करें तो उपरोक्त तालिका के अनुसार महिलाओं का निर्वाचन प्रतिशत गिरा है। यह एक चिन्तनीय बिन्दु है। राजस्थान विधानसभा चुनाव दिसम्बर 2018 में निर्वाचित विधायकों का विवरण निम्नानुसार रहा है :–

नाम	राजनीतिक दल	विधानसभा क्षेत्र
मीना कंवर	कांग्रेस	शेरगढ़
दिव्या मदैरणा	कांग्रेस	उनार्सया
शकुन्तला रावत	कांग्रेस	बानसूर
इन्द्र	कांग्रेस	बामनवास
मानवी देवी	कांग्रेस	जायल
चन्द्रकान्ता	भाजपा	कैसोराय पाटन
मेघवाल	भाजपा	कैसोराय पाटन
सूर्याकांता व्यास	भाजपा	शूरसागर
शोभा चौहान	भाजपा	सोजत
कल्पना देवी	भाजपा	लाडपुरा
शर्मिला खाडिया	स्वतंत्र	खुशालगढ़
निर्मला सहरिया	कांग्रेस	किशनगंज
सिद्धि कुमारी	भाजपा	बीकानेर (पूर्व)
शोभा रानी	भाजपा	धौलपुर
कुशवाहा	भाजपा	धौलपुर
मनीषा पंवार	कांग्रेस	जोधपुर
किरण माहेश्वरी	भाजपा	राजसमंद
कृष्णा पूनिया	कांग्रेस	शार्दुलपुर
ममता भूपेश	कांग्रेस	सिकराय
शोभा चौहान	भाजपा	सोजत
मानवी देवी	कांग्रेस	जायल
गंगा देवी	कांग्रेस	बगरू
अनीता	भाजपा	अजमेर (दक्षिण)
भदेल	भाजपा	अजमेर (दक्षिण)
संतोष	भाजपा	अनुपगढ़
जाहिदा खान	कांग्रेस	कामा
वसुन्धरा	भाजपा	झालरापाटन

पांच राज्यों की विधानसभा के चुनावों में (दिसम्बर 2018) दलीय स्थिति निम्न हैः–

प्रदेश	भाजपा	कांग्रेस (INC)	BSP+JCC (J)	TRS	MNF	स्वतंत्र	कुल
मिजोरम	01	06	-	-	26	28	40
राजस्थान	73	100	06	-	-	21	200
छत्तीसगढ़	16	68	06	-	-	–	90
मध्यप्रदेश	111	112	02	-	-	25	230
तेलंगाना	01	21	-	87	-	10	119
कुल	202	305	14	87	26	64	678/679

महिला प्रत्याशीयों की दलीय स्थिति :–

राज्य	परिणाम	कांग्रेस	भाजपा	बसपा	अन्य	स्वतन्त्रत	कुल
राजस्थान		13%	12%	8%	8%	6%	
	विजय	11	10	–	01	01	23
छत्तीसगढ़		15%	16%	12%	19%	07%	
	विजय	10	01	01	01	–	13
मध्यप्रदेश		12%	11%	10%	13%	37%	
	विजय	09	10	01	02	–	22

राजस्थान विधान सभा चुनाव 2013, 2018 में पुरूषों, महिलाओं के मतदान प्रतिशत को निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया हैः–

	2013	राज्य	2018	अन्तर
महिला मतदाता	75.66%	राजस्थान	74.18%	1.48 कम रहा
पुरूष मतदाता	74.92%	राजस्थान	73.80%	1.12 कम रहा

भारत में एक समय ऐसा था जब 29 राज्यों में पाँच महिला मुख्यमंत्री एक साथ सत्ता में रही थी। वसुन्धरा राजे के त्यागपत्र के बाद पश्चिमी बंगाल में ममता बनर्जी की सत्ता ही शेष रह गई है। मुख्यमंत्री के रूप में सर्वाधिक कार्यकाल दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित की रही है यह 1998 से 2013 तक लगातार 3 बार मुख्यमंत्री रही है। तमिलनाडू की मुख्यमंत्री श्रीमती जयललिता पाँच बार मुख्यमंत्री पद पर चुनी गई देश की सबसे पहली मुख्यमंत्री सुचित्रा कृपलानी उत्तरप्रदे की बनी थी।

राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारिता का कारण

- **अशिक्षाः** अधिकांश महिलाएं अशिक्षित होती है भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार साक्षरता प्रतिशत 65.46 है। पुरूषों में 82.14 है, जिसके कारण महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं होती राजनीतिक क्रियाकलापों को वोट देने के अधिकारों का ज्ञान नहीं होता है।
- **पारिवारिक तनाव** के कारण राजनीति, परिवार के बीच उचित तालमेल नहीं बिठा पाती उसका सारा ध्यान बच्च, पति, सास–ससुर, घर परिवार की देखभाल जिम्मेदारियां निभाने में लग जाता है (2014)''। 3. स्त्रियां पुरूषों पर अधिक निर्भर पाई जाती है। हमारा देश पुरूष प्रधान देश है। पुरूषों का वर्चस्व हर क्षेत्र में दिखाई देता है। पुरूषों की दकियानुसी सोच महिलाओं को राजनीति में आने नहीं देती उन्हें इस क्षेत्र में आने पर पुरूषों का दखल अधिक दिया जाता है जात महिलाएं गांव में सरपंच बनती है या राजनीति में किसी पद पर होती है, उनके पिता, भाई या अन्य पुरूष के प्रभाव में काम करती है, इनमें निर्णय, आदेश के अनुसार चलती है। महिलाओं की अपनी स्वयं की कोई राय नहीं होती है। जातिवाद का अधिक बोलबाला है। अपनी पुस्तक कास्ट इन इण्डियन पॉलिटिक्स में भारतीय राजनीति में जाति की भूमिका को बताया जातिवाद के कारण अन्य जाति की योग्य उम्मीदवार चाहे व पुरूष हो या महिलाएं राजनीति में आने से वंचित हो जाती है **कोठारी (1970)''**। क्षेत्रीय दबावों से कई खतरनाक बात यह है कि वर्तमान काल में जाति व्यक्तियों को एकता के सूत्र में बांधने में बाधक सिद्ध हुई **गाड़गिल (1961)''**। परम्परावादी जाति व्यवस्था ने प्रगति, आधुनि राजनीतिक व्यवस्था को इस प्रकार प्रभावित किया है कि ये राजनीतिक संस्थाएं अपने मूलरूप में कार्य करने में सक्षम नहीं रही है **श्रीनिवासन''**।

महिलाओं की भागीदारी से राजनीति में प्रभाव

महिलाओं का राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने पर सम्पूर्ण राजनीति, समाज को फायदा होता है। राजनीति में जो अपराधीकरण, भ्रष्टाचार, स्वेच्छाचारिता उग्रता है, उसमें कमी होगी। शिष्टता, गरिमा बढ़ेगी, हिंसा कम होगी, सामाजिक प्रथा, कुरूतियां खत्म होगी, बालिकाओं, किशोरी, महिलाओं के उत्थान, विकास पर अधिक ध्यान दिया जायेगा। उनके शिक्षा स्वास्थ्य, रोजगार को बेहतर बनाया जायेगा स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों में अधिक बराबरी, संतुलन आयेगा।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारिता बढ़ने से महिला एवं पुरूष दोनों के विकास का एक नया दौर शुरू हुआ है, इसके परिणाम बेहतर ही होंगे, किंतु यह तक सम्भव होगा जब एक और पुरूष वर्ग व्यापक सामाजिक राजनीतिक हित महिलाएं अपने राजनीतिक अधिकारों की समानता के लिए पुरजोर संघर्ष करें।

निष्कर्ष

राजनीति में महिलाओं की बुरी स्थिति के लिए जिम्मेदार हमारा समाज और स्वयं राजनीतिक पार्टिया है, जो महिलाओं को राजनीति में स्वीकार करने को तैयार नहीं है, यदि कोई महिला राजनीति में खड़ी होती है तो उन पर भद्दी टिप्पणी की जाती है, जैसे शरद यादव ने वसुधरा राजे पर उनके मोटापे को लेकर किया था कि वसुधंरा राजे मोटी हो गयीं हैं, उन्हें आराम की जरूरत है, इसी तरह सुषमा स्वराज, ममता बनर्जी, प्रियंका गांधी आदि सभी को इस तरह की अन्य कई प्रकार की भद्दी–भद्दी टिप्पणीया झेलनी पड़ती है। अगर वह राजनीति में विफल होती है, तो उनके महिला होने के एंगल के सामने ला दिया जाता है, जबकि विफल पुरूष भी होते है, राजनीति में महिला आरक्षण का बिल देवगौड़ा की सरकार ने 1996 में संसद में महिला आरक्षणबिल पेश किया था। 2010 में राज्य सभा में बिल पास तो हो गया लेकिन लोकसभा में कॉग्रेस को बहुमत नहीं होने की वजह से लोकसभा में यह बिल पास नहीं हो सका। राजनीति में भाई–भतीजावाद (नेपोटिज्म) भी बहुत पाया जाता है। राजनेता अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए अपनी बहु बेटियो, अपनी पत्नीयों को राजनीति में खड़ा करते है। उन्हें राजनीति के अखाड़ों में उनके पतियों, भाईयों, पिताओं के पीछे खड़ा करके अपने–अपने पार्टी की प्रत्याशी के तौर पर दिखाते है। अतः राजनीति में महिला भागीदारिता बनाने के लिये संसद में लम्बित महिला विधेयक को पारित करने हेतु दोनों सपनो को ईमानदारी का परिचय देना होगा। पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी हेतु जिस तरह आरक्षण व्यवस्था है, वैसी ही व्यवस्था संसद, विधानसभा में पुरूष प्रधान समाज महिलाओं के प्रति नकारात्मक, सर्कीण जो सोच है, उसे दूर करनी होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

~ सर्वपल्ली राधाकृष्णन (2008) – ग्रेट वीमन ऑफ इंडिया, स. स्वामी माधवनन्दन, दिल्ली अद्वैत आश्रम।

~ Dumont Louis (1970): Homohiearchicus, New Delhi Vikas Publication.

~ कटारिया आर.जी. (2014): घरेलू हिंसा से संरक्षण विधि, नई दिल्ली ओरिऐन्ट।

~ कोठारी रजनी (1970): भारतीय राजनीति में जाति।

~ गाड़गिल डी.आर. (1961): Planning and economic policy in India, 5th addition.

~ Shree Niwasan M.N.: Caste in modern India and other essays, New Delhi asia publishing house.

~ राजस्थान पत्रिका 17 दिसम्बर 2018

~ राजस्थान पत्रिका 13 दिसम्बर 2018

~ राजस्थान निर्वाचन आयोग रिपोर्ट 2018

~ Indian express December 12/2018.

♦❒♦